Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

विकसित भारत विजन 2047 : राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रवीण कुमार सोनी*

* सहायक प्राध्यापक(वाणिज्य) शासकीय महाविद्यालय, माकडोन, जिला उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत ने 2047 तक अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने पर, एक विकसित राष्ट्र बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति केवल बुनियादी ढांचे या औद्योगिक विकास से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए मानव पूंजी का इष्टतम उपयोग आवश्यक है। भारत की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाएं इस यात्रा में केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता हैं। यह शोध पत्र विकसित भारत 2047 के संदर्भ में महिलाओं की बहुआयामी भूमिका, आर्थिक योगदान, सामाजिक परिवर्तन, नेतृत्व और तकनीकी नवाचार का विश्लेषण करता है। साथ ही यह उन बाधाओं की पहचान करता है जिन्हें दूर करना अनिवार्य है ताकि भारत सही मायनों में समावेशी विकास हासिल कर सके। यह शोध विकसित भारत विजन 2047 के लक्ष्य को पाने में भारतीय महिलाओं की भूमिका एवं महिला शिक्षा और सशक्तिकरण का देश के आर्थिक विकास पर होने वाले महत्वपूर्ण प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि महिला शिक्षा से न सिर्फ महिलाओं के व्यक्तिगत जीवन स्तर में सुधार होता है, बल्कि यह एक देश के आर्थिक विकास के विभिन्न तत्वों जैसे सकल घरेलू उत्पाद, उत्पादन क्षमता और गरीबी की दर पर भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक प्रभाव डालती है।

शब्द कुंजी – विकसित भारत, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास, सकल घरेलू उत्पाद, मानव पूंजी, श्रम बल भागीदारी, उद्यमिता,गरीबी उन्मूलन, समावेशी विकास।

प्रस्तावना – प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित विकसित भारत 2047 का विजन भारत को एक समृद्ध, आत्मनिर्भर और वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का रोडमैप है। इस विजन के केंद्र में नारी शक्ति की अवधारणा है। पिछले कुछ दशकों में, भारत ने महिलाओं के विकास से महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास की ओर एक महत्वपूर्ण प्रतिमान बदलाव देखा है।

विश्व बैंक और आईएमएफ जैसे वैश्विक संस्थानों का मानना है कि यदि भारत अपनी महिला श्रम शक्ति भागीदारी को पुरुषों के बराबर ले आए, तो देश की जीडीपी में भारी उछाल आ सकता है। 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना तब तक अधूरा है जब तक महिलाएं अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में कृषि से लेकर एयरोस्पेस तक समान भागीदार नहीं बनतीं। यह शोध पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे महिलाएं भारत की जनसांख्यिकीय लाभांश को आर्थिक महाशक्ति में बदल सकती हैं।

शोध का उद्देश्य – इस शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करना है:

1. आर्थिक सशक्तिकरण और जीडीपी में महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना।
2. विजन 2047 के लक्ष्य प्राप्ति में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
3. महिला सशक्तिकरण के संबंध में चुनौतियों एवं बाधाओं का अध्ययन करना।
4. विकसित भारत विजन 2047 के लिए रोडमेप का अध्ययन करना।

आर्थिक सशक्तिकरण और जीडीपी में महिलाओं का योगदान– विकसित भारत का आधार एक मजबूत अर्थव्यवस्था है। महिलाओं की आर्थिक भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

श्रम शक्ति भागीदारी – वर्तमान में भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी में सुधार हो रहा है, लेकिन यह अभी भी वैश्विक औसत से कम है। विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिला श्रम शक्ति भागीदारी को 50 प्रतिशत से ऊपर ले जाने का प्रयास होना चाहिए। मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी बढ़ाकर 2025 तक जीडीपी में 770 बिलियन डॉलर जोड़ा जा सकता है, और 2047 तक यह आंकड़ा कई गुना बढ़ सकता है।

उद्यमिता और स्टार्टअप्स – भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। इसमें महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी बढ़ रही है। भारतीय महिला उद्यमी फाल्गुनी नायर द्वारा स्थापित नायका जैसी कंपनियों की सफलता ने साबित कर दिया है कि महिलाएं बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन कर सकती हैं।

MSME – आज भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में महिलाओं का नेतृत्व ग्रामीण और अर्ध–शहरी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

लखपति दीदी योजना– स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने की यह पहल 2047 तक ग्रामीण

अर्थव्यवस्था का चेहरा बदल देगी। जब एक महिला कमाती है, तो वह अपनी आय का 90 प्रतिशत भाग अपने परिवार और समुदाय पर खर्च करती है, जिससे मानव विकास सूचकांक (HDI) में सुधार होता है।

गिग इकोनॉमी और केयर इकोनॉमी – वैश्विक अर्थव्यवस्था का भविष्य गिग इकोनॉमी और केयर इकोनॉमी पर निर्भर होगा। कॉरापोरेट जगत के नये प्रयोग जैसे वर्क–फ्रॉम–होम और फ्लेक्सी–आर्स महिलाओं के लिए नए अवसर खोल रहे हैं। इसके अलावा भारत की केयर इकोनॉमी को औपचारिक रूप देने की आवश्यकता है। महिलाएं, जो अक्सर अवैतनिक देखभाल कार्य करती हैं, यदि उसे जीडीपी में गिना जाए या उसे मुद्रीकृत किया जाए, तो आर्थिक आंकड़े बदल जाएंगे।

सामाजिक विकास और मानव पूंजी– वैश्विक स्तर पर मानव पूंजी किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की आधारशिला है। इस पूंजी का एक अभिन्न और प्राय: उपेक्षित हिस्सा महिलाएँ हैं। जब किसी देश की आधी आबादी को शिक्षा और अवसरों से वंचित रखा जाता है, तो उस देश की विकास क्षमता स्वत: ही सीमित हो जाती है। महिला शिक्षा और उनके सशक्तिकरण को केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा मानना एक अधूरी समझ है, यह वास्तव में एक शक्तिशाली आर्थिक अनिवार्यता है। एक विकसित राष्ट्र केवल धन से नहीं, बल्कि अपने नागरिकों के सामाजिक जीवन स्तर से परिभाषित होता है।

शिक्षा और कौशल विकास – नई शिक्षा नीति (2020) में लैंगिक समानता पर जोर दिया गया है। उच्च शिक्षा में महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात अब पुरुषों से आगे निकल रहा है।

STEM में भूमिका– विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) में भारतीय महिलाओं का प्रतिशत 43 है जो कई विकसित देशों जैसे अमेरिका, यूके से भी अधिक है। 2047 के भारत में, ये महिलाएं अनुसंधान और नवाचार (R&D) का नेतृत्व करेंगी।

स्वास्थ्य और पोषण – शिक्षित माताएँ स्वास्थ्य सेवाओं का बेहतर उपयोग करती हैं, पोषण संबंधी जानकारी रखती हैं, और स्वच्छता पर अधिक ध्यान देती हैं। इससे शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आती है। भारत में मातृ मृत्यु दर में गिरावट एक सकारात्मक संकेत है। 2047 तक भारत को कुपोषण मुक्त और एनीमिया मुक्त बनाने में माताओं और आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका निर्णायक होगी। स्वस्थ कार्यबल ही उत्पादक कार्यबल बन सकता है।

राजनीतिक नेतृत्व और नीति निर्माण – जब महिलाएँ राजनीतिक और सामाजिक रूप से सशक्त होती हैं, तो यह सीधे आर्थिक परिणामों को प्रभावित करता है।

बेहतर शासन और कम भ्रष्टाचार – अध्ययनों से पता चला है कि स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से सार्वजनिक वस्तुओं (जैसे पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य) के आवंटन में अधिक पारदर्शिता आती है और भ्रष्टाचार में कमी आती है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण विधेयक) का पारित होना भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक अभूतपूर्व क्षण है।

संसद और विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व – लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण यह सुनिश्चित करेगा कि नीति निर्माण में महिलाओं का दृष्टिकोण शामिल हो। 2047 तक हम उम्मीद कर सकते हैं कि देश की विदेश नीति, रक्षा नीति और आर्थिक बजट बनाने में महिलाओं की समान भागीदारी होगी।

जमीनी स्तर पर नेतृत्व – पंचायती राज संस्थाओं में पहले से ही महिलाओं को आरक्षण प्राप्त है। बिहार और अन्य राज्यों के उदाहरण दिखाते हैं कि महिला प्रधान और सरपंच अक्सर शिक्षा, स्वच्छता और शराबबंदी जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देती हैं, जो सीधे तौर पर सामाजिक उत्थान से जुड़े हैं। 2047 का भारत बॉटम–अप (नीचे से ऊपर) शासन मॉडल पर आधारित होगा, जिसका नेतृत्व ग्रामीण महिलाएं करेंगी।

विज्ञान, तकनीक और रक्षा क्षेत्र

अंतरिक्ष और विज्ञान – चंद्रयान–3 और मंगलयान मिशनों में महिला वैज्ञानिकों की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि रॉकेट वुमन भारत को अंतरिक्ष महाशक्ति बनाने के लिए तैयार हैं। 2047 तक, भारत के अपने स्पेस स्टेशन और अंतरग्रहीय मिशनों में महिलाओं की भूमिका प्रमुख होगी।

रक्षा और सुरक्षा – अब महिलाएं भारतीय सेना की लड़ाकू इकाइयों, फाइटर पायलट और नौसेना के युद्धपोतों पर तैनात हो रही हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान कर्नल सौफिया कुरेशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह जैसी साहसी महिलाओं का दम पूरे विश्व ने देखा है। निश्चित रूप से 2047 तक भारत की रक्षा रणनीति में लैंगिक बाधाएं पूरी तरह समाप्त हो चुकी होंगी, जिससे एक आधुनिक और समावेशी सेना का निर्माण होगा।

डिजिटल भारत और ड्रोन दीदी – कृषि में तकनीक का उपयोग बढ़ाने के लिए नमो ड्रोन दीदी जैसी पहल क्रांतिकारी है। ग्रामीण महिलाएं ड्रोन पायलट बन रही हैं, जो खेती को आधुनिक बना रहा है। यह तकनीक और परंपरा का अद्भुत संगम है जो विकसित भारत की कृषि उत्पादकता को बढ़ाएगा।

चुनौतियां और बाधाएं – यद्यपि विजन स्पष्ट है, लेकिन 2047 की राह में कई चुनौतियां भी हैं जिनका समाधान आवश्यक है–

सामाजिक मानदंड और पितृसत्ता – अभी भी समाज के एक बड़े हिस्से में पितृसत्तात्मक सोच हावी है जो महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित रखना चाहती है।

सुरक्षा और हिंसा– कार्यस्थलों और सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा की कमी महिलाओं को श्रम बल में शामिल होने से हतोत्साहित करती है।

वेतन अंतराल – भारत में समान काम के लिए समान वेतन अभी भी पूरी तरह लागू नहीं हो पाया है। इसे लागू करना देश के आर्थिक विकास के लिये अत्यंत आवश्यक है।

डिजिटल असमानता– ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच डिजिटल साक्षरता का अंतर एक बड़ी चुनौती है।

दोहरा बोझ– कामकाजी महिलाओं पर अक्सर घर और दफ्तर दोनों की जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ होता है।

भविष्य का रोडमैप – 2047 के लिए रणनीतियां – विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है–

3E Model : Education, Employment, Empowerment

Education शिक्षा– केवल साक्षरता नहीं, बल्कि वित्तीय और डिजिटल साक्षरता पर जोर।

Employment रोजगार– कार्यस्थलों पर सुरक्षा सुविधा, सुरक्षित परिवहन और मातृत्व अवकाश के बाद वापसी के आसान कार्यक्रम।

Empowerment सशक्तिकरण– निर्णय लेने की क्षमता और संपत्ति के अधिकार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।

जेंडर बजटिंग – सरकार को हर मंत्रालय के बजट में जेंडर ऑडिट अनिवार्य करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि संसाधनों का लाभ महिलाओं तक समान रूप से पहुंच रहा है।

केयर वर्क का पुनर्मूल्यांकन – घरेलू काम में पुरुषों की भागीदारी बढ़ाना और अवैतनिक कार्य को मान्यता देना। इसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि केवल महिला के कर्तव्य के रूप में।

सुरक्षा का बुनियादी ढांचा – स्मार्ट पुलिसिंग, फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स और टेक्नोलॉजी का उपयोग करके महिलाओं के लिए भय-मुक्त वातावरण बनाना होगा।

निष्कर्ष – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता- (जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं) – इस प्राचीन भारतीय आदर्श को आधुनिक संदर्भ में महिला नेतृत्व वाले विकास के रूप में देखने की आवश्यकता है।

विकसित भारत 2047 केवल ऊंची इमारतों, बुलेट ट्रेनों या ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के बारे में नहीं है, यह एक ऐसे समाज के निर्माण के बारे में है जहां हर महिला को अपनी क्षमता का एहसास करने का अवसर मिले। जब एक महिला सशक्त होती है, तो वह केवल अपना नहीं, बल्कि पूरे परिवार, समाज और राष्ट्र का भाग्य बदल देती है।

अमृत काल (2022-2047) का यह कालखंड कर्तव्य काल है। भारत की महिलाएं अब अबला नहीं, सबला हैं, वे अब सहायता की नहीं, अवसर की मांग कर रही हैं। 2047 के सूर्योदय में, भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में तभी चमकेगा जब उसकी आधी आबादी उसकी मातृशक्ति विकास की मशाल लेकर सबसे आगे चलेगी। अत:, विकसित भारत का विजन महिलाओं के योगदान के बिना असंभव ही नहीं, बल्कि अकल्पनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. NITI Aayog Reports on Sustainable Development Goals.
2. Ministry of Women and Child Development, Annual Reports.
3. McKinsey Global Institute Report: The Power of Parity.
4. World Economic Forum: Global Gender Gap Report.
5. Economic Survey of India (Various Years).
6. Vision 2047 Documents by Government of India.

****